कोख का सफल प्रत्यारोपण

गर्भाशय के प्रत्यारोपण के बाद एक महिला ने एक स्वस्थ शिशु को जन्म दिया है। उम्मीद की जा रही है कि इस वर्ष और अगले वर्ष इस तरह के और भी प्रसव होंगे। मगर विज्ञान जगत में इसे लेकर कई सवाल हैं। जैसे गर्भाशय का दान करने वाली महिला 61 वर्ष की थी। तो क्या 61-वर्षीय गर्भाशय गर्भावस्था को संभालने में सक्षम रहता है? और सबसे बड़ी बात तो यह है कि जिस महिला को यह गर्भाशय लगाया गया उसके शरीर ने इसे अस्वीकार क्यों नहीं किया?

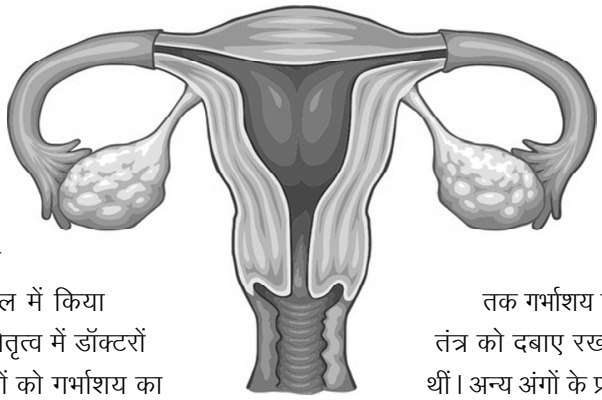

गर्भाशय प्रत्यारोपण का यह काम स्वीडन में गोथेनबर्ग के सालग्रेंस्का विश्वविद्यालय के अस्पताल में किया गया। मैट्स ब्रैनस्ट्रॉम के नेतृत्व में डॉक्टरों के एक दल ने 9 महिलाओं को गर्भाशय का प्रत्यारोपण किया है। उपरोक्त 36-वर्षीय महिला उनमें से एक है।

उसे यह गर्भाशय एक पारिवारिक मित्र ने दान दिया है जो स्वयं दो बच्चों को जन्म दे चुकी है। प्रत्यारोपण के 12 महीने बाद इस महिला के गर्भाशय में खुद उसके अपने अंडाणु और उसके साथी के शुक्राणुओं के मेल से उत्पन्न भ्रूण आरोपित किया गया। अंडाणु व शुक्राणु का मेल शरीर से बाहर (यानी *इन विट्रो*) करवाया गया था। इसके 9 माह बाद उसने एक तंदुरुस्त बच्चे को जन्म दिया।

ऑस्ट्रेलिया के डॉक्टर एश हनाफी का कहना है कि 61-वर्षीय गर्भाशय-दाता का गर्भाशय एकदम बढ़िया है। वे तो कहते हैं कि उनके पास प्रमाण हैं कि 70 साल उम्र का गर्भाशय भी बढ़िया काम करेगा, क्योंकि दरअसल फर्क तो अंडाणु से पड़ता है। हनाफी के मुताबिक गर्भाशय एक मकान की तरह है। आप चाहे पुराने घर में रहें या नए मकान में, दोनों ही आपको बारिश से बचाते हैं। वे कहते हैं कि कोख तो बस एक इन्क्यूबेटर (अंडे सेने की मशीन) की तरह है। यह एक अद्भुत अंग है और कितना भी बूढ़ा हो जाए, काम करता रहता है। यह हारमोन वगैरह को सही प्रतिक्रिया देता रहता है।

जहां तक प्रत्यारोपण के बाद गर्भाशय को अस्वीकार किए जाने की बात है, तो ऑपरेशन के 12 महीने बाद तक गर्भाशय पाने वाली महिला के प्रतिरक्षा तंत्र को दबाए रखने के लिए दवाइयां दी गई थीं। अन्य अंगों के प्रत्यारोपण से हासिल अनुभव के आधार पर शोधकर्ता जानते थे कि भ्रूण आरोपित करने से पहले यदि एक साल इन्तज़ार करेंगे तो गर्भावस्था के दौरान प्रतिरक्षा तंत्र को दबाए रखने वाली औषधियों की कम ज़रूरत पड़ेगी। इसके अलावा, डॉक्टर हनाफी कहते हैं कि गर्भावस्था स्वयं ही प्रतिरक्षा तंत्र को दबाने का काम करती है क्योंकि गर्भावस्था के दौरान शरीर भ्रूण को अस्वीकार नहीं करता जबकि वह एक पराई चीज़ होती है।

जिन अन्य आठ महिलाओं को गर्भाशय का प्रत्यारोपण किया गया उनमें से दो ने उसे अस्वीकार कर दिया, चार अभी 12 माह की प्रतीक्षा अवधि में हैं और दो गर्भवती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***